तन्हाई के तसव्वुर

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

तन्हाई के तसव्वुर

(दिल की धड़कन के नग्मे व तराने)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018
ISBN : 978-93-88167-94-9
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

TANHAI KE TASVVUAR (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पित

समर्पित है उस निर्मल और पवित्र प्यार को
जो हर-पल रोम-रोम में हमेशा विद्यमान है
जो प्रतीक है मीरा, राधा-कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर औ रांझा के सम्बन्धों का
जिसमें घर और परिवार होने का अहसास है
जिसमें बेशुमार प्यार की चाहत व क़शिश है
जिसमें एक दूसरे की ज़रूरतों के जज़्बात हैं
जिसमें तन-मन के संसार होने का विश्वास है
जिसमें विचारों का इज़हार, इक़रार व क़रार है
जिसमें दिल से बेहिसाब बेख़ुदी का आलम है
जिसमें सतरंगी सावन व बसंत का मधुमास है
जिसमें शमा व परवाने की क़ुदरती कायनात है
जिसमें दिल की पुकार में सगुन की शहनाई हैं
जिसमें रस्मों औ रिवाज़ों के तीज व त्यौहार हैं
जिसमें विरह की वेदना मे मिलन की मुरादें हैं
जिसमें प्यार के अजर-अमर होने की कामना है
जिसमें सदियों तक साथ रहने की ख़्वाहिशें हैं
जिसमें प्यार एक साधना, उपासना, आराधना है
जिसमें मन की वीणा के मधुर गीत-संगीत है
जिसमें मुश्क़िल वक़्त में सहयोग की भावना है
जिसमें करवा चौथ के व्रत, सावन के सोमवार हैं
जिसमें एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान है
जिसमें प्रेम की हिफ़ाज़त में दिल से दुआयें हैं
जिसमें हर हालात में एक-दूसरे पर ऐतबार है
जिसमें सुहाग के सिंदूर, सात वचन के बंधन है
जिसमें मिलन की तमन्ना ख़ुदा की इबादत है
जिसमें चराग़ों की रोशनी बनने की भावना है
जिसमें प्यार की ख़ुशी में शजर का चिन्तन है
जिसमें प्यार इन्सान के लिए हवा औ पानी है
जिसमें तन व मन के भाव का ईश्वरीय बोध है।

अनुक्रम

महबूब का इस्तक़बाल	23
महबूब का अहसास	44
मुहब्बत ख़ुदा के सामने	47
मुहब्बत की ख़्वाहिशें	50
महबूब की समझदारी	52
महबूब मेरे लिये	54
आख़िरी ख़्वाहिश	56
आपके बिना	58
अन्ज़ाम-ए-चाहत	60
बेबस दिल की पुकार	64
बेगुनाह, गुनहगार	72
दिल की ख़्वाहिशें	76
महबूब का तसव्वुर	78
महबूब शजर का फलसफ़ा	85
आओ सखी हम प्यार को	87
प्यार एक आराधना	98

ई.सी.जी. के ग्राफ़ सी बनती कविताओं का संग्रह

भरा हुआ भाव आकण्ठ प्यार का, देख लिया कौना-कौना
इस पोथी के पृष्ठ-पृष्ठ पर, भाव भरा मीठा रस का दोना

मित्रो! तन्हाई के तसव्वुर (ओह! मेरे मधुर प्यार) शीर्षक से यह काव्य संग्रह मेरे सामने है। प्यार, प्यार और बस प्यार! हर पृष्ठ, हर पैरा, हर पंक्ति में बस प्रेमरस, प्रीतिरस, रस ही रस झलक रहा है। मैं भूल नहीं जाऊँ अत: एक बात पूरी दृढ़ता से यहाँ उल्लेखित करना चाहूँगा कि भले ही प्रेम को लेकर बीसों-पचीसों, सौ-दो सौ लोगों ने भरपूर लिखा हो, लेकिन बन्धुवर अजय कुमार शर्मा 'साथी' जहानवी ने सभी को पीछे छोड़ दिया है-प्रेम काव्यों के सृजन के लिहाज़ से। अस्तु!

मित्रो! गत वर्ष भी बन्धुवर 'साथी' जी के इसी तरह के प्रकाशित काव्य ग्रन्थ में भी मुझे सम्मति लिखने का सौभाग्य मिला, लेकिन इस ग्रन्थ में उपस्थित कविताओं के क्रम संयोजन ने मुझे भी विस्मित कर दिया है। वाह! क्या संरचना है कविताओं की।

प्रेमी आयेगा या आ रहा है-लेकिन सहज रूप से नहीं, साधारण रूप से नहीं, पूर्ण भव्यता से, शाही अन्दाज़ में आयेगा। कविवर 'साथी' का कल्पनालोक इस ज़मीन पर ऐसा निर्मित हुआ है कि पढ़ते ही बनता है, प्रंशसा करते ही बनता है। प्रेमी के स्वागत में कवि किन-किन से आग्रह नहीं करता है-गुलशन से, तन-मन से, पशुओं से, बेचैनी से, समय से, तक़्दीर से, फ़लक़ से, लम्हों से, मौसम से, लताओं से, रंगों से, कायनात से, त्यौहारों से, खेत खलिहानों से, नदियों और झरनों से, रस्मो-रिवाज़ों से, माहताब से, वादों और ईरादों से, पंच-तत्वों से, दिल और दिमाग़ से, रातों से, देवताओं से, अंग-अंग से, पक्षियों से, सुबह और शाम से, घटाओं से, हवाओं से, अवाम से और गुलों से। अर्थात् 29 संज्ञाओं से उपस्थित जीवन से जुड़ाव वाले शीर्षकों में प्रयुक्त भावों से। इन सब से कवि कहता है कि मेरे महबूब का स्वागत करो-अभिनन्दन करो।

यहाँ 29 के 29 शीर्षकों के अंशों को प्रस्तुत करना उपयुक्त भी नहीं और कठिन भी बहुत है लेकिन एक दो बानगी यहाँ देना अतिआवश्यक है। कवि 'साथी' जहानवी अपने महबूब के इस्तक़बाल में गुलशन से अर्थात बाग-बग़ीचों, उपवनों से, आग्रह कर रहे हैं कि:-

मेरे शहर के सारे पेड़ और पौधो
सारे के सारे गुलों और गुलशनो
ऐसी सुंदरता से महक जाओ कि
हर तरफ बसन्त की फुलवारी में
जन्नत के नज़ारे नज़र आ जायें

कवि इससे और आगे बढ़ता है तथा नगर के पशुओं से आग्रह करता है:-

मेरे शहर के सारे के सारे पशुओ
मेरे दिमाग़ की ज़ुबान को समझो
क्योंकि मेरा मधुर प्यार पहली बार
तन और मन से विचलित हो कर
मिलन की आस लेकर आ रहा है
तुम इतने समझदार हो जाओ कि
वह तन-मन से अभिभूत हो जाये

ऐसे आग्रहों की शृंखलाबद्ध 29 कविताओं में 'रंगों से' जो आग्रह किया है वो भी दृष्टव्य है:-

कायनात में सारे के सारे क़ुदरती रंगों
मेरे सतरंगी सुंदर व हसीं आशियाने में
मेरे दिल के जज़्बातों को साकार करो
मेरे दिल की कल्पनाओं को आकार दो

क्योंकि मेरा मधुर प्यार पहली बार
मुहब्बत के हसीन रंग में रंग कर
रोम-रोम से प्रेम के परमानन्द में
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

और तो और त्यौहारों से भी कवि ऐसा आग्रह करता है कि आज तक किसी भी प्रेम काव्य में ऐसा भाव आया ही नहीं होगा:-

सारे के सारे तीज और त्यौहारों
तुम सब के सब इतने उमंग भरे
सतरंगी औ बसंती हो जाओ कि
महबूब का बेज़ान दिलो-दिमाग़
हर्षोल्लास से प्रसन्नचित्त हो जाये

अपने महबूब को अभिनन्दन करवाने में कवि नगर की जनता जनार्दन से भी आग्रह करने में पीछे नहीं रहा:-

हे! मेरे शहर के तमाम बाशिन्दो
मेरे ख़्वाबों की ताबीर को समझो
सबको मेरे मन की बात बता दो
सारे ज़माने में यह ख़बर कर दो

तुम सारे के सारे पाक़ मुहब्बत के
इस तरह से मसीहा हो जाओ कि
उसको पाक़ औ निर्मल मुहब्बत में
सारी की सारी पवित्र ख़ुदाई और
कायनात में जन्नत नज़र आ जाये

प्रेम के सातों समन्दरों की कुल गहराई से भी कहीं गहरी अनुभूतियों को अपने भीतर समेटे प्रेम काव्य का यह शिखर कवि भाई 'साथी' जहानवी अपने महबूब को बस एक ही आदर्श वाक्य से सम्बोधित करता है:- 'ओह! मेरे मधुर प्यार, मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार'। ग्रन्थ का हर पन्ना 'ओह! मेरे मधुर प्यार' का सम्बोधन पत्र है। कवि ने 29 कविताओं में 'इसरार' के बाद शेष कविताओं में स्वंय अपने महबूब को भी सम्बोधित करके मुक्तकों को में अपना प्यार मन्तव्य प्रकट किया है-जैसे 'महबूब मेरे लिये' शीर्षक में कवि महबूब से कहता है:-

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अहसास के एकमत होने वाला मतदान हो
प्यार के रिश्ते की ख़ुशहाली के विधान हो
घर-परिवार की ज़रूरत के लिए ईमान हो
जीवन में आशा व विश्वास के संविधान हो

महबूब को आज तक ऐसी विशेषणात्मक व्यंजनाओं से अन्य कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रयुक्त नहीं किया होगा। महबूब के बिना कवि कैसा अनुभव करता है ज़रा इसे भी देखते चलें:-

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुझसे मत रहा करो इस तरह से बेज़ार
मेरा तन-मन इतना हो जाता है बेक़रार
अश्क़ों के दरिया बहने लगते हैं बेशुमार
बदहाल हो जाता है मेरा चैन औ क़रार

मित्रो! सम्मति लेखन अमर्यादित नहीं होना चाहिये। मन तो कर रहा है कि इस अनूठे प्रेम ग्रन्थ से आपको और भी रू-ब-रू कराऊँ लेकिन मर्यादा अनुमती नहीं देती है। 'ओह! मेरे मधुर प्यार' शीर्षक वाले इस प्रेम ग्रन्थ में कुल जितने पृष्ठों में कवितायें टंकित हैं एक से बढ़कर एक अनोखे अन्दाज़ में हैं।

मित्रो! मेरी अटल, अटूट मान्यता है कि अपनी अन्तःश्चेतना और बाह्यश्चेतना के समन्वय से जो भी काव्य सृजन होता है उसे मान्यता मिलनी ही चाहिये। और इस मान्यता के क्रम में बन्धुवर अजय शर्मा आज के दौर के सर्वाधिक प्रेम काव्य लिखने वाले सक्रिय सारस्वत कवि हैं। व्याकरणचार्यों का अहम् अपनी जगह पर जहाँ का तहाँ छोड़ दिया जाना चाहिये। क्योंकि उनकी समझ प्रेम और प्रेमी के उस स्तर तक जाने में अक्षम होती है जहाँ से ऐसी ही काव्यरस धाराओं का अनवरत निर्झरण होता

रहता है। जिस प्रकार से प्रेम समस्त लौकिक वर्जनाओं को स्वीकार नहीं करता है, उसी प्रकार प्रेम काव्य भी काव्य के शास्त्रीय विधान को पार करके ही विस्फोटक रूप से फूटता है जो फिर किसी भी बन्धन में बान्धने की समस्त कोशिशों को नकार देता है।

मित्रो! विस्तार में न जा कर इस प्रेमग्रंथ के सर्जक श्री अजय शर्मा 'साथी' जहानवी को अपार बधाईयाँ, शुभेच्छाएँ देता हुआ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ। विश्वास है यह पुस्तक प्रेमियों के मध्य लोकप्रिय होगी ही होगी। और अन्त में जैसा कि स्वभाव रहा है चार पंक्तियाँ:-

प्रेम काव्यों की संरचना करना, कोई तो खेल नहीं है
काव्यशास्त्र की दीवारों में, बन्धक कोई रखैल नहीं है
मधुर प्यार से सराबोर, इस प्रेम के ग्रंथ को वन्दन है
प्रेम काव्य के सर्जक कवि, श्री 'साथी' का अभिनन्दन है

शुभकामनाओं के साथ-

-रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया'

(सदस्य 'सरस्वती सभा', राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर)

109, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा-9

मो.: 90575-48158

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरुआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अज़ूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

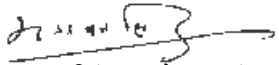

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'
(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)
346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001
मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेज़ुबान तसव्वुर के मंजरे-आम (विमोचन) के बाद सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तस्व्वुर, मुहब्बत एक इबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह अमावस का चाँद और क़तरा-क़तरा दरिया आपकी नज़र कर रहा हूँ।

गुज़िश्ता वक़्त में शायरी अपने महबूब से ग़ुफ़्तगू का ज़रिया हुआ करती थी। मेरे यह काव्य संग्रह भी इसी सिम्त महज़ एक कदम है। ज़िन्दगी के सफ़र में मुहब्बत के कई रंग और मन्ज़र से मैं आशना और बावस्ता रहा। मसलन मिलन, तन्हाई, जुदाई, ख़ामोशी, इबादत, गिले-शिक़वे, बेरुख़ी, तौहीन, रन्जो-ग़म, बेचैनी, बेक़रारी, दीवानगी, बेख़याली, बेख़ुदी, इज़हार, इक़रार, सुकून, वफ़ा, ज़फ़ा, बेवफ़ाई, रुसवाई, मज़बूरी, हसरत, ऐतबार, इन्तज़ार, मायूसी, बदहाली, क़शिश, चाहत, अहसास, रूठना-मनाना और भी बहुत कुछ। मुहब्बत को जिस तरह से जिया उसे ही शायरी की शक़्ल में तहरीर करने की कोशिश की है याने मुहब्बत के ज़ज़्बात, मुहब्बत के लिये। मुहब्बत के गुलशन को आबाद होने के लिये इज़हार, इक़रार, गुफ़्तगू और मुलाक़ातें इतनी ज़रूरी नहीं है जितना मुहब्बत के अहसास का अपने दिलो-दिमाग़ और ख़्वाबो ख़यालों में हमेशा ज़िन्दा रहना ज़रूरी है।

मेरे यह काव्य संग्रह उस पाक़ और बेइन्तहा मुहब्बत जो राधा-कृष्ण, हीर-

राँझा, सोनी-महिवाल, लैला-मजनू, शीरी-फ़रहाद की मुहब्बत जैसी है जिसमें निर्मल व पवित्र, इन्सानियत व हमदर्दी की भावनायें हैं और जो अजर-अमर है को समर्पित है जो बेहद मज़बूर,लाचार और बेबस होने के बावजूद भी अपने महबूब से मिलने और एकसार होने के लिये इतनी बेचैन और बेक़रार है कि ख़ास अपनों से और सारे ज़माने से बग़ावत के लिये तैयार है। मगर ज़माने के रस्मो-रिवाज़ और हालात से बहुत बेबस है। मुहब्बत में इस कदर बेख़ुदी का आलम है कि हर वक़्त अपने महबूब का ख़याल ही हमेशा दिल और दिमाग़ में रहता है। सांसों की हर धड़कन में उसका अहसास इतना ज़रूरी है कि उसके बिना ज़िन्दा रहना मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है। मुहब्बत में इस कदर जोश व जुनून और दीवानगी है कि जान कुर्बान करने को भी तैयार है। वादे व इरादे और जज़्बात व ख़यालात इस कदर बेहद मज़बूत है कि तमाम उम्र के लिये हर हालात में शरीके हयात बनकर हमसफ़र रहने को तैयार है। विरह की व्याकुल वेदना में अपने तन-मन से भी बेसुध और सारी कायनात से भी बेख़बर है। ख़्वाबों और ख़यालों में सिर्फ़ और सिर्फ़ हर वक़्त अपने महबूब का अक़्स और फलसफ़ा रहता है। मालूम है कि आख़िर में क्या होगा मगर मुहब्बत में दिल और दिमाग़ इतना दीवाना होता है कि किसी की भी नहीं मानता। उसे तो अपना महबूब ही सब कुछ नज़र आता है। यहाँ तक कि ख़ुदा से कम नहीं लगता। मुहब्बत के अहसास, क़शिश और चाहत को मुक़म्मिल तौर पर सही तरह से तहरीर करना बेहद मुश्क़िल है। महबूब का आशियाना जन्नत और ख़ुदाई से बेहतर लगता है। तन्हाई में महबूब की यादों में रहना ज़ियारत से कम नहीं है। जुदाई का वक़्त काले पानी की सज़ा से भी ज़्यादा है। यह कहना बेहद मुनासिब होगा कि मेरी मुहब्बत का यह आख़िरी और मुक़म्मिल फलसफ़ा है कि मेरा प्यार मेरे तन-मन, मेरे दिल औ दिमाग़ यानी मेरी ज़िन्दगी की कायनात का सम्पूर्ण संसार है।

मुहब्बत का यह ख़ूबसूरत सफ़र उस मन्ज़िल पर है जहाँ पर एक-दूसरे को शरिके हयात का अहसास रहता है इसलिये मैंने शायरी में ऐसे शब्दों को काम में लिया है जैसे सुहाग का सिन्दूर, करवा चौथ का व्रत, वरमाला, सात फेरे, सात वचन, सुहाग की सेज, घर परिवार, रस्मो रिवाज़ के बन्धन जो कि एक शादीशुदा ज़िन्दगी में ही यह सब कुछ होता है। निर्मल और पवित्र प्यार अजर और अमर मुहब्बत का मक़सद ऐसा होना चाहिये जिसमें शरीके हयात के ऐतबार, अहसास, जज़्बात, ज़रूरतों,

परेशानियों, मज़बूरियों और बेबसी के मुक़म्मल तसव्वुर दिलो-दिमाग़ में रहे और मुहब्बत जन्मों-जन्मों के लिये सात फेरों के बन्धन में बन्धने को बेहद बेताबी और बेसब्री से बेहद बैचैन और बेक़रार रहे। ख़ुदा ख़ैर करे कि मुहब्बत का यह सफ़र ज़िन्दगी के इस मुकाम पर हर हालात में ज़रूर पहुँचे जहाँ पर दो बदन एक जान हो जाते हैं और दुनिया से बेख़बर हो जाते हैं।

वैसे रूमानियत शायरी करना मुश्क़िल है। महफ़िल में सुनाना और दीवान की शक़्ल देना तो और भी बेहद मुश्क़िल है। रूमानियत सुख़नवर को जिस नज़र से देखा जाता है वह शख़्सियत अच्छी नहीं मानी जाती है फिर भी मैं यह नादान ग़ुस्ताख़ी कर ख़तरा मोल ले रहा हूँ। उम्मीद है मेरी यह कोशिश आपको पसन्द आयेगी और आपके दिलो-दिमाग़ को सुक़ून मिलेगा। अपने दिली जज़्बातों से मुझे ख़बर करने की मेहरबानी ज़रूर करें। आपके जज़्बात, ख़यालात और सलाह मेरे लिये बहुत अहमीयत रखती है। इन काव्य संग्रहों में कुछ ऐसा लिखने में आ गया हो और जिससे किसी के दिल और दिमाग़ को ठेस पहुँचती है तो मैं तहेदिल से माफी माँगता हूँ। यक़ीनन ऐसा मेरा कोई इरादा नहीं था।

किसी एक विषय पर इतनी सारी रचनायें लिखना यदपि नामुमक़िन तो नहीं है मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर होता है इसलिए रचनाओं में शब्दों व सोच का दोहराव आ गया हो फिर भी यथा सम्भव इस दोहराव से बचने की तमाम कोशिशें की गई है। अधिकतर रचनायें ग़ज़ल जैसी विधा में है। ग़ज़ल के तमाम शेर एक ही विषय पर हों यह ज़रूरी नहीं होता है। फिर भी एक ही विषय पर ग़ज़ल जैसी विधा में रचनायें लिखकर मैनें नई परम्परा आरम्भ की है जो कि रचना की विषय वस्तु से पूरी तरह से तालमेल रखती है। जब रचनायें एक ही विषय पर अधिक मात्रा में हो जाती हैं तो रचना संसार भी विस्तृत हो जाता हैं। तब फिर नई-नई उपमायें और प्रतीकों का सृजन होता है। मैंने बहुत सारे ऐसे शब्दों, उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया है जिनकी बानगी इन रचनाओं में देखी जा सकती है। ऐसा है मेरा प्यार, महबूब का इस्तक़बाल, चाहत का चिन्तन, चाहत और क़शिश मेरे लिये, मुहब्बत मेरे लिये, प्रकृति और प्यार, बेबस दिल की पुकार, विरह की वेदना, क्या यह मुमक़िन होगा, शजर का फलसफ़ा, महबूब का तसव्वुर और मुहब्बत के सुबूत। अमूमन रूमानियत शायरी में ऐसा होता

नहीं है। उम्मीद है कि इन रचनाओं में इन उपमाओं से कुछ नया ज़रूर लगेगा और आप अच्छा महसूस करेंगे। हो सकता है भविष्य में यह रचनायें रूमानियत शायरी के सन्दर्भ में आम आदमी के लिये चर्चा का विषय बन जाये।

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है, मेरी यह आरजू और मन्नत भी नहीं है कि, मेरी शायरी इल्मी अदब की महफ़िलों में शायरों के लिए मयार (उच्चस्तर) की हो व बज़्म में पायेदार (सम्मान जनक) भी हो। तमाम शायर मेरी शायरी पर तबादला-ए-ख़याल (विचार विमर्श) कर अपना बेशक़ीमती वक़्त बर्बाद करें। मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा (प्रार्थना) और ख़ुदा से ताहीर (निर्मल) और पाक़ दुआ है कि मेरी शायरी में मेरे महबूब के निर्मल व पवित्र अहसास, हसीन व ख़ूबसूरत जज़्बात, ख़्वाब व ख़याल, यादें व मुलाक़ातें, दिल का ऐतबार, क़रार व इन्तज़ार, पाक़ दुआयें, चैन व सुकून, दास्तान व अरमान, आराधना व साधना, दिल की पुकार, विरह की वेदना, मधुर-मिलन, शजर का चिन्तन, दीदार व मिलन, त्यौहार व परिवार, रोम-रोम का आभास, तन-मन का विश्वास यानि मेरे महबूब के तन-मन के सम्पूर्ण संसार के सिवाय कुछ नहीं हो।

विस्तृत अर्थों और सन्दर्भों में मुहब्बत महज़ एक ख़याल और तसव्वुर नहीं है। हज़ारों सालों का इतिहास ग़वाह है कि प्यार की वज़ह से वो भी मुमक़िन हो गया जो बेहद नामुमक़िन था। हक़ीक़त और यथार्थ में कोई पारिवारिक और सामाजिक बन्धन में बन्धकर नर्क से भी बदतर ज़िन्दगी को जी रहा है। यदि उसे महज़ तसव्वुर में अपने महबूब से हसीन मुहब्बत का ख़ूबसूरत अहसास हो जाता है और अपना नर्क से भी बदतर जीवन जन्नत से भी बेहतर लगता है और अपना तन-मन, रोम-रोम और दिलो दिमाग़ इतना ख़ुशगवार लगता है कि जैसे सावन और बसन्त के मधुमास में गुलशन हरियाली और ख़ुश्बूओं से महक कर आबाद रहता है। मैं तो इन ख़यालात को किसी भी प्रकार से ग़लत नहीं समझता हूँ और मुहब्बत को अक़ीदत (श्रद्धा) समझकर इबादत (पूजा) करता हूँ।

'क्या यह मुमक़िन होगा' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार की वज़ह से जो हालात तन-मन, दिल और दिमाग़, रोम-रोम और अपनी ज़िन्दगी पर जो बेहद गहरा असर होता है वह कैसे ख़त्म हो सकता है उनको बयान करने की कोशिश की है।

महबूब का इस्तक़बाल (स्वागत) शीर्षक से जो रचनायें है वह फ़िल्मी गीत 'बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है' से प्रेरित है जिसमें यह लिखने की कोशिश की है जब महबूब प्रथम मधुर मिलन के लिये आता है उसके स्वागत में लिखी गई रचनाएँ हैं जिसमें महबूब के स्वागत में अनेक तरह के दिली जज़्बात, अहसास, सारी की सारी कायनात से इसरार और निवेदन, अभिनन्दन और अभिवादन तहरीर किये गये हैं। 'ऐसा है मेरा प्यार' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार को कई तरह से उन उपमाओं से परिभाषित किया गया है जो दैनिक जीवन में काम आती है। इन रचनाओं में आधुनिक परिवेश की परम्परागत परिवेश से तुलना कर प्यार के अहसास और जज़्बात को अनूठा और निराला बनाये रखने की दिली ख़्वाहिशें और तमन्नायें हैं। और भी बहुत सारी रचनायें है जो एक ही विषय वस्तु पर एक ही शीर्षक पर अलग अलग तरह से बहुत बार लिखी गई है ताकि उस विषय वस्तु का सम्पूर्ण वर्णन किया जा सके। बेबस दिल की पुकार, मधुर मिलन, मन की मुरादें, महबूब का अक़्स, मुहब्ब्त का अहसास, मिलन की मन्नतें, महबूब का तसव्वुर, आदि तवील रचनायें है जिसमें मुहब्बत की दास्तान को मुक़म्मिल तौर पर तहरीर किया गया है। महबूब का तसव्वुर रचना में महबूब को माँ, पत्नी, बहन, दोस्त,औरत, बेटी और महबूब के तसव्वुर में ख़याल किया गया है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और गलतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर अपने दिली जज़्बात और अहसास को अपने महबूब से गुफ़्तगू के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैग़ाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मिल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु',श्री रामेश्वर शर्मा' रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर

अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी ग़ुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा ही ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

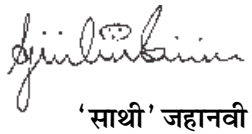

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी की मुहब्बत का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

महबूब का इस्तक़बाल

गुलशन से इसरार

मेरे शहर के सारे के सारे पेड़ पौधों
मेरे दिल और दिमाग़ के तसव्वुर को
मेरे महबूब के ख़्वाबों और ख़यालों में
इस तरह साकार और आकार कर दो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
सावन व बसन्त के मधुमास में
बेताब, बेचैन व बेक़रार होकर
मिलन की आस में आ रहा है

सारे के सारे गुलों और गुलशन
ऐसी सुंदरता से महक जाओ कि
हर तरफ बसन्त की फुलवारी में
जन्नत के नज़ारे नज़र आ जायें।

तन-मन से इसरार

हे! मेरे शरीर के हर रोम-रोम
और मेरे शरीर के सभी अंगों
मेरे दिल की आवाज़ को सुनो
मेरे तन-मन को महसूस करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
निर्मल व पवित्र तन व मन से
बेबस, बेचैन और बेक़रार होकर
मिलन की आस में आ रहा है

मेरे तन में प्राणों का ऐसा संचार कर
दो बदन एक जाँ होने के अहसास में
तुम इतने स्वच्छ-निर्मल हो जाओ कि
वह मेरे रोम-रोम से एकसार हो जाये।

पशुओं से इसरार

मेरे शहर के सारे के सारे पशुओ
मेरे दिमाग़ की ज़ुबान को समझो
मेरे दिल के जज़्बात आभास करो
मेरी चाहत के इशारे महसूस करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
विरह की व्याकुल वेदनाओं में
तन व मन से विचलित होकर
मिलन की आस में आ रहा है

तुम इतने समझदार हो जाओ कि
तुम्हारा निर्मल, पवित्र और विनम्र
अभिवादन व अनुरोध स्वीकार कर
तन और मन से अभिभूत हो जाये।

बेचैनी से इसरार

हे! मेरे तन और मन में नाचते
मधुर मुलाक़ात में मन के मयूर
दिलो-दिमाग़ पर विश्वास करो
मेरे मन की बेचैनी महसूस करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
विरह की व्याकुल वेदनाओं में
विचलित और बेक़रार हो कर
मिलन की आस में आ रहा है

तुम इस तरह से चितचोर होकर
उसके बेचैन दिल व दिमाग़ को
इस तरह आनन्दित कर दो कि
उसका मन प्रसन्नचित हो जाये।

वक़्त से इसरार

हे! मेरे शहर के सुनहरे दिनों
मेरे मन के जज़्बात को समझो
क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
उम्मीदों और ऐतबार के साथ

मधुर-मिलन की आस लिये आ रहा है
इस तरह से उसका अभिनन्दन करो कि
परेशानियों व चिन्ताओं से मुक्त हो कर
उस का भविष्य जगमग रोशन हो जाये।

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे ऐतबार, आराधना,साधना,
उपासना, प्रार्थना, जज़्बात, ख़यालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो-दिमाग औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है।

तक़्दीर से इसरार

गगन के सारे के सारे ग्रह व नक्षत्रों
मेरे दिली दुआओं को अहसास करो
मेरे मन की मन्नतों को महसूस करो
मेरे दिल व दिमाग़ की मुरादें समझो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
मन से हताश व निराश होकर
दिमाग़ से हैरान परेशान होकर
प्यार की आस लिए आ रहा है

सारे के सारे ग्रहों और नक्षत्रों
इस तरह अनुकूल हो जाओ कि
प्रतिकूल व विपरीत हाल में भी
उस के रोशन भाग्य के सितारे
नील गगन जैसे बुलंद हो जायें।

फ़लक़ से इसरार

सारे के सारे तारों और सितारों
दिली जज़्बात का अहसास करो
क्यों कि मेरा महबूब पहली बार
खोया-खोया सा उदास हो कर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम पूनम की शीतल चाँदनी रात में
इस तरह से जगमग झिलमिला कर
इस तरह से हसीन व रंगीन हो कर
इतने ख़ूबसूरत रोशन हो जाओ कि

उसके बेनूर दिल और दिमाग़ में
दिवाली की रोशन रात की तरह
घर परिवार के आँगन में ख़ुशियाँ
रोशनी की तरह आबाद हो जाये।

लम्हों से इसरार

हे! मेरे ख़ूबसूरत व हसीन लम्हों
मेरे दिल की आवाज़ को सुनकर
मेरे अहसासों का आभास कर के
महबूब को पल-पल महसूस करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
रस्मों और रिवाज़ों के बन्धन में
बन्धकर उम्मीदों को साथ लेकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इस तरह से इतने ख़ूबसूरत
हसीं यादगार लम्हे हो जाओ कि
तमाम ज़िन्दगी के लिये उस का
करवा चौथ का त्यौहार हो जाये।

मौसम से इसरार

मेरे शहर की ख़ूबसूरत फ़िज़ाओ
मेरे दिल की तमन्ना को समझो
सावन और बसन्त की बहार से
मेरा आँगन ख़ुश्बू से महक जाये

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
बेक़रार, बेताब और बेसब्र होकर
मुझपे दिली ऐतबार व उम्मीद से
इस अहसास व जज़्बात के साथ
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इस तरह से हसीन जन्नत के
इतने ख़ूबसूरत नज़ारे हो जाओ कि
उसके बेक़रार, बेचैन तन व मन को
दिल व दिमाग़ से ऐतबार आ जाये।

लताओं से इसरार

फूलों से लदी हुई ख़ूबसूरत लताओ
मेरे दिल की कल्पनायें साकार करो
मेरे दिल के जज़्बात को आकार दो
मेरे दिल के अहसास को विचार दो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
ख़्वाहिशों व तमन्नाओं को लेकर
ख़ूबसूरत आशियाने की आस में
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम सब ख़ुश्बूओं से महककर
इतनी ख़ूबसूरत हो जाओ कि
उसके हसीं व नाजुक गले में
वरमाला का विश्वास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ऐसे ऐतबार, आराधना, साधना,
उपासना, प्रार्थना, जज़्बात, ख़यालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो-दिमाग़ औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है

तुम अतिशीघ्र चले आओ मेरे मधुर प्यार
विचलित विरह की व्याकुल वेदनाओं में
मेरे भी तन-मन बेहद बेचैन व बेक़रार हैं।

रंगों से इसरार

कायनात में सारे के सारे क़ुदरती रंगों
मेरे सतरंगी सुंदर व हसीं आशियाने में
मेरे दिल के जज़्बातों को साकार करो
मेरे दिल की कल्पनाओं को आकार दो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
मुहब्बत के हसीन रंग में रंगकर
रोम-रोम से प्रेम के परमानन्द में
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम सारे के सारे एक-दूजे से मिलकर
इस तरह सुर्ख लाल रंग हो जाओ कि
उसकी बदहाल और बदरंग ज़िन्दगानी
सूनी माँग में सुहाग का सिंदूर हो जाये।

कायनात से इसरार

हे! ज़मीन व आसमान के हसीन नज़ारों
मेरे दिल की भावनाओं को साकार करो
मेरे तन-मन के जज़्बातों को आकार दो
सारी कायनात इस तरह हसीन कर दो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
संसार की सुन्दरता को देखकर
अपने ख़्वाब सच करने के लिये
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इस तरह हसीन व सतरंगी हो कर
मन मोहक और ख़ूबसूरत हो जाओ कि
उसके बेचैन और बेक़रार तन व मन में
दीवानगी व ख़ुमारी का आलम हो जाये।

त्यौहारों से इसरार

संसार के सारे के सारे तीज व त्यौहारों
मेरे मन की कल्पनाओं को महसूस करो
मेरे रस्मों और रिवाज़ों पर विश्वास करो
मेरे दिल की भावनाओं का अहसास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
जीवन में नीरस व उदास होकर
ज़िन्दगी से बेरंग औ बेनूर होकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम सबके सब इतने उमंग भरे
सतरंगी व बसन्ती हो जाओ कि
उसका बेजान दिल और दिमाग़
हर्षों उल्लास से प्रसन्न हो जाये।

खेत और खलिहानों से इसरार

मेरे शहर के सारे खेत और खलिहानों
मेरे दिल के जज़्बातों को महसूस करो
मेरे तन व मन के अहसास को समझो
मेरे प्यार की भावना पर विश्वास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
ऐसी ख़्वाहिशों को साथ लेकर
ऐसी उम्मीदों व आशाओं के संग
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम धन औ धान से परिपूर्ण होकर
इस तरह से ख़ुशहाल हो जाओ कि
उसका बदहाल वर्तमान और भविष्य
जगमग रोशन और आबाद हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ऐसे ऐतबार, आराधना, साधना,
उपासना, प्रार्थना,जज़्बात, ख़यालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो-दिमाग़ औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है

तुम अतिशीघ्र चले आओ मेरे मधुर प्यार
विचलित विरह की व्याकुल वेदनाओं में
मेरे भी तन-मन बेहद बेचैन व बेक़रार हैं।

नदियों और झरनों से इसरार

मेरे शहर की सारी नदियों और झरनों
मेरे दिल की बेचैनी का अहसास करो
मेरे दिल के ख़यालों को महसूस करो
मेरे मन की बेक़रारी का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
तन और मन की तश्नगी लेकर
मन की बेचैनी से बेक़रार होकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इस तरह इतनी शांत
और शीतल हो जाओ कि
उसका प्यासा तन औ मन
निर्मल और पवित्र हो जाये।

रस्मों और रिवाज़ों से इसरार

सारे के सारे रस्मों और रिवाजों
मेरे घर की रिवायतों को समझो
मन की मन्नतों को महसूस करो
दिली तमन्नाओं का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
जीवन साथी का अहसास लेकर
रस्मों और रिवाजों को निभा कर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

सारे के सारे रस्मों और रिवाज़ों
तुम उसके इतने अनुकूल हो कर
ऐसे निर्मल व पवित्र हो जाओ कि
उस के सारे अरमान पूरे हो जायें।

माहताब से इसरार

हे! मेरे महबूब जैसे सुहावने माहताब
चकोर से अपने मिलन को याद करो
मेरे मन के जज़्बात को महसूस करो
तन-मन की बेचैनी का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
तन और मन से बेक़रार हो कर
सुहाग रात की ख़्वाहिश लेकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम पूनम का चमकता चाँद हो जाओ कि
तुम्हारी शीतल व सुहावनी चाँदनी रात में
उसकी सुहाग रात की हसरतें व ख़्वाहिशें
हसीं कल्पनाओं के साथ साकार हो जायें।

वादों और इरादों से इसरार

हे! मेरे सारे जीवन के वादों व इरादों
मेरे मन के जज़्बातों को स्वीकार करो
मेरे दिल के अहसास को महसूस करो
मेरे ख़्वाबों व ख़यालों का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
बेताब, बेचैन और बेक़रार हो कर
जीवन से हताश-निराश हो कर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इतने पवित्र-निर्मल हो कर
इतने नेक़ मज़बूत हो जाओ कि
उसे अन्तिम साँस तक के लिये
मुझ पर सम्पूर्ण ऐतबार आ जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ऐसे ऐतबार, आराधना, साधना,
उपासना, प्रार्थना, जज़्बात,. खयालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो-दिमाग़ औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है

तुम अतिशीघ्र चले आओ मेरे मधुर प्यार
विचलित विरह की व्याकुल वेदनाओं में
मेरे भी तन-मन बेहद बेचैन व बेक़रार हैं।

पंच तत्वों से इसरार

कायनात के सारे के सारे पंच तत्वों
दिल की बेक़रारी का अहसास करो
प्यार में क़शिश की ख़्वाहिशें समझो
तन-मन की बेचैनी को महसूस करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
तन और मन से परेशान हो कर
दिल व दिमाग़ से बेज़ार हो कर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

दुनिया के सारे पंच-तत्वों
इस तरह उस के बदन में
ऐसे संतुलित हो जाओ कि
वह अपने तन और मन से
स्वस्थ औ निरोगी हो जाये।

दिल और दिमाग़ से इसरार

हे! मेरे निर्मल दिल और दिमाग़
मेरे महबूब के पवित्र तन-मन का
ख़ूबसूरत व मधुर अहसास करके
हसीन मुलाक़ात का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
तीज व त्यौहार की उमंग लेकर
घर और परिवार की आस लेकर
रस्मो-रिवाज़ों के बंधन में बंधकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम उसकी बेबस सूनी माँग में
सुहाग का सिंदूर हो जाओ कि
उसको सारी ज़िन्दगी के लिये
सुख व दुख के साथी होने का
तमाम उम्र का विश्वास हो जाये।

रातों से इसरार

मेरे शहर की महकती सुहानी
पूनम की शीतल चाँदनी रातों
मन की तमन्नायें महसूस करो
मेरे जज़्बातों का अहसास करो
क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
बेबस, बेताब और बेक़रार हो कर
मधुर मिलन के बेचैन इंतज़ार में
सारी रात करवटें बदल-बदलकर
रतजगी रात की सुबह को लेकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम ऐसी ख़ूबसूरत हो जाओ कि
उस के निर्मल तन और मन को
उसके अंग-अंग व रोम-रोम को
सुहाग रात का अहसास हो जाये।

देवताओं से इसरार

मेरे शहर के सभी देवी औ देवताओं
मेरे मन की मन्नतों को महसूस करो
मेरे दिल की दुआ का अहसास करो
आराधना औ उपासना स्वीकार करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
ज़माने से हैरान व परेशाँ होकर
तमन्नाओं को पूरा करने के लिये
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम सारे के सारे इस तरह से
इतने रहम दिल हो जाओ कि
उसकी सभी मनोकामनायें औ
दिल की मुरादें संपूर्ण हो जायें

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ऐसे ऐतबार, आराधना, साधना,
उपासना, प्रार्थना, जज़्बात, ख़यालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो दिमाग औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है

तुम अतिशीघ्र चले आओ मेरे मधुर प्यार
विचलित विरह की व्याकुल वेदनाओं में
मेरे भी तन-मन बेहद बेचैन व बेक़रार हैं।

अंग-अंग से इसरार

हे! मेरे तन के सभी अंगों
मेरे दिल की धड़कनों को
महसूस औ अहसास करो
रोम-रोम का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
बेक़रार, बेसब्र और बेचैन होकर
तन औ मन से विचलित होकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम उसे तन और मन में
इस तरह से समा लो कि
बेक़रार दो बदन मिलकर
हमेशा के लिये ज़िंदगी में
दो तन एक जाँ हो जायें।

पक्षियों से इसरार

मेरे शहर के सारे के सारे पक्षियों
बेताब बेक़रार दिल की धड़कन में
बेबसी व बेचैनी का आभास करके
मेरे ख़यालात को मेरा पैग़ाम करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
उसके अधूरे सपनों को लेकर
हकीक़त में सच करने के लिए
प्यार की आस लिए आ रहा है

तुम उसके ख़्वाबों और ख़यालों की
ऐसी ख़ूबसूरत उड़ान हो जाओ कि
उसके हसीन ख़्वाबों व ख़यालों को
बेशुमार औ बेहिसाब पंख लग जाये।

सुबह-शाम से इसरार

मेरे शहर की निर्मल और शान्त सुबह
मेरे शहर की हसीन व सुहावनी शाम
मेरे दिली ख़यालों को ऐसे आकार दो
मेरे तन व मन में ऐसे साकार कर दो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
सुबह-शाम को गुज़ारने के लिये
यादगार व हसीं लम्हों के साथ
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इस तरह इतनी ख़ूबसूरत
हसीन व सुहानी हो जाओ कि
उस के बेचैन दिलो दिमाग़ को
उसके तन-मन व रोम-रोम को
स्वर्ग के जैसा विश्वास हो जाये।

घटाओं से इसरार

मेरे शहर की पुरवाई घटाओं
मेरे रोम-रोम के जज़्बातों का
मेरे बेचैन दिल औ दिमाग़ में
निर्मल व पवित्र अहसास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
मुहब्बत की अगन में झुलस कर
अपने तन औ मन को शान्त कर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम इस तरह से सावन का
सतरंगी महीना हो जाओ कि
बरसात की शीतल बहारों से
उसका अगन सा जलता तन
शांत, पवित्र व निर्मल हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ऐसे ऐतबार, आराधना, साधना,
उपासना, प्रार्थना, जज़्बात, ख़यालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो-दिमाग़ औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है

तुम अतिशीघ्र चले आओ मेरे मधुर प्यार
विचलित विरह की व्याकुल वेदनाओं में
मेरे भी तन-मन बेहद बेचैन व बेक़रार हैं।

हवाओं से इसरार

हे! मेरे शहर की मनमोहक, मदमस्त
सुहावनी, शीतल और निर्मल हवाओं
मेरे प्यार की ख़्वाहिशों को समझो
मेरे तन की अग्न को महसूस करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
बेचैन, बेबस व मज़बूर होकर
मुझ से इक़रार करने के लिये
इस आस में मिलने आ रहा है

तुम इस तरह सावन औ बसन्त की
इतनी सुहावनी बहारें हो जाओ कि
उसके बेचैन औ बेक़रार तन-मन में
शीतल और निर्मल इक़रार आ जाये।

अवाम से इसरार

हे! मेरे शहर के तमाम बाशिन्दों
मेरे ख़्वाबों की ताबीर को समझो
सबको मेरे मन की बात बता दो
सारे ज़माने में यह ख़बर कर दो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
बहुत दूर से इस आशा के साथ
बेहद मज़बूर और बेज़ार हो कर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम सारे के सारे पाक़ मुहब्बत के
इस तरह से मसीहा हो जाओ कि
उसको पाक़ औ निर्मल मुहब्बत में
सारी की सारी पवित्र ख़ुदाई और
कायनात में जन्नत नज़र आ जाये।

गुलों से इसरार

मेरे शहर के सबके सब फूलों
मेरे दिल की आवाज़ को सुनों
मेरे मन की रंगत महसूस करो
मेरे रोम-रोम का आभास करो

क्योंकि मेरा महबूब पहली बार
दिलो-दिमाग़ से ख़ूबसूरत होकर
मन में सुन्दरता की आस लेकर
मुझसे मिलने के लिये आ रहा है

तुम सारे के सारे इस तरह से
ऐसे ख़ूबसूरत खिल जाओ कि
उस के हसीन चेहरे की रंगत
तुम्हारी पँखुड़ियों की तरह से
ख़ूबसूरत होकर के खिल जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे ऐतबार, आराधना, साधना,
उपासना, प्रार्थना, जज़्बात, ख़यालात,
अहसास, इसरार, अक़ीदत, इबादत, दुआ,
इक़रार, फलसफ़ा, ख़्वाबों व ख़यालातों से
मेरे तन और मन के ख़ूबसूरत आशियाने में
मेरे दिलो-दिमाग़ औ रोम-रोम के अहसास में
आपका तहेदिल से मेरे मन मन्दिर में इस्तक़बाल है

तुम अतिशीघ्र चले आओ मेरे मधुर प्यार
विचलित विरह की व्याकुल वेदनाओं में
मेरे भी तन-मन बेहद बेचैन व बेक़रार है।

---

1. इस्तक़बाल=स्वागत **2.** बाशिन्दों=निवासियों **3.** बेज़ार=उदास **4.** मसीहा=फ़रिस्ते
5. इसरार=आग्रह **6.** अक़ीदत=श्रद्धा **7.** इबादत=प्रार्थना **8.** फलसफ़ा=चिन्तन।

महबूब का अहसास

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके निर्मल दिल और दिमाग़ में

मेरे सारे के सारे जीवन के लिए विश्वास है
जीवन साथी बने रहने का संपूर्ण आभास है
जिसके ख़याल में मधुर मिलन का प्रवास है
जिसके मन में ख़ूबसूरत प्रेम का अहसास है

ऐसा मेरा निर्मल और पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का संपूर्ण संसार है
जिससे मेरे जीवन में हसीन बहार है
जो मेरे घर व परिवार का आधार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके निर्मल तन और मन में

मेरे बुरे वक़्त में मेरी ज़रूरतों के जज़्बात हैं
मेरी परेशानियों के लिये मन में सवालात हैं
मेरे तन-मन के अहसास उसकी कायनात है
मेरे बिना उसकी हसीन ज़िन्दगी हवालात है

ऐसा मेरा निर्मल और पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का संपूर्ण संसार है
जिससे मेरे जीवन में हसीन बहार है
जो मेरे घर व परिवार का आधार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके निर्मल रोम और रोम में

जिसकी आँखों में साजन का इन्तज़ार है
विचलित विरह की वेदनाओं में बेक़रार है
दिल की ख़्वाहिशों में मिलन की पुकार है
जन्मों-जन्मों में मुहब्बत के लिए ऐतबार है

ऐसा मेरा निर्मल और पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का संपूर्ण संसार है
जिससे मेरे जीवन में हसीन बहार है
जो मेरे घर व परिवार का आधार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके निर्मल ख़्वाबों और ख़यालों में

जिसके ख़्वाबों में ख़ूबसूरत सपनों का मकान है
जिसके अंग-अंग में मेरे अहसास के अरमान है
मेरी मुहब्बत उस के दिल में दीन और ईमान है
जिसके मन में घर व परिवार के लिए अजान है

ऐसा मेरा निर्मल और पवित्र प्यार है
जो मेरे तन-मन का संपूर्ण संसार है
जिससे मेरे जीवन में हसीन बहार है
जो मेरे घर व परिवार का आधार है।

मुहब्बत ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

महबूब के तन-मन में महबूब
ख़ुदा से बढ़ा ख़ुदा के सामने
दुनिया का ख़ुदा शर्मसार था
मेरे महबूब के ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

मुहब्बत इबादत और अक़ीदत से
दुआ व मन्नत जैसी हो जाये तो
दिलो-दिमाग़ में ऐतबार से महबूब
ख़ुदा हो जाता है ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

हर रोज दीवानों की मज़ारों पर
रोशन होते हैं अक़ीदत के चराग़
कोई तो दिल से दीवाना बनकर
कोई तो दफ़्न हो ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

मज़बूर और बेक़रार होकर
महबूब ने ख़ुदकुशी कर ली
रिवाज़ों से बेबस महबूब का
जवाब होगा ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

दीनो-ईमान और सारी दुनिया से
बेख़बर औ बेख़ुदी के ऐसे आलम
महबूब के ख़्वाबों और ख़यालों में
महबूब के ख़याल ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने

मुहब्बत जब भी तड़प-तड़प कर
विरह-वेदना में दम तोड़ देती है
शर्मसार और ईमानदार महबूब है
ज़माने के बेरहम ख़ुदा के सामने

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब ख़ुदा होता है ख़ुदा के सामने।

मुहब्बत की ख़्वाहिशें

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी पाक़ व ताहीर मुहब्बत के
जज़्बातों में हमेशा ऐसा ऐतबार रहे

मुहब्बत के लिए हमारे दिलों में ईमान रहे
अपना महबूब दिलो-दिमाग़ में भगवान रहे
हमारे प्यार का सारे ज़माने में सम्मान रहे
दोनों के दिल में उल्फ़त का इत्मीनान रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

इस तरह के अहसास और जज़्बात
हमारे हसीन ख़्वाबों औ ख़यालों से
हमारे ख़ूबसूरत प्यार की ज़िंदगी में
ऐसी दुआयें बेहिसाब औ बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी निर्मल और पवित्र मुहब्बत के
इस तरह से अजर और अमर विचार रहे

स्वस्थ और निरोगी हमारी कंचन काया रहे
तन-मन पे एक दूजे के प्यार की छाया रहे
आशियाने में महकती ख़ुशियों का साया रहे
शान व शौक़त से ज़िन्दगी का सरमाया रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

इस तरह के अहसास और जज़्बात
हमारे हसीन ख़्वाबों और ख़यालों से
हमारे ख़ूबसूरत प्यार की ज़िन्दगी में
ऐसे फलसफ़े बेहिसाब व बेशुमार रहे।

महबूब की समझदारी

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

माना कि मुझ में हैं बहुत सारी ऐसी नादानियाँ
प्यार निभाने के लिये ज़रूरी है यह निशानियाँ
हमारे प्यार की लिखी जायेंगी मधुर कहानियाँ
चाहे कैसी और कितनी भी आयेंगी परेशानियाँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने निर्मल दिल और दिमाग़ में
हमेशा ऐसी समझदारी बनाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे प्यार की कभी नहीं होगी बदनामियाँ
हमेशा के लिये ज़रूर दूर होगी नाक़ामियाँ
हमें ज़रूर मिलेगी ख़ुदा की ये मेहरबानियाँ
ज़ालिम ज़माने की नहीं चलेगी बईमानियाँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने पवित्र निर्मल तन और मन में
हमेशा प्यार का ऐसा ऐतबार बनाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने दिलो दिमाग़ और तन-मन में
ऐसी समझदारी और ऐतबार बनाये रखना।

महबूब मेरे लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मछली के लिये जल की ज़रूरत हो
मासूम बचपन की चंचल शरारत हो
सावन में पिया मिलन की हसरत हो
हसीं नज़ारे की ख़ूबसूरत क़ुदरत हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरी तमन्नाओं के लिये क्या नहीं हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अहसास के एकमत होने वाला मतदान हो
प्यार के रिश्ते की ख़ुशहाली के विधान हो
घर-परिवार की ज़रूरत के लिये ईमान हो
जीवन में आशा व विश्वास के संविधान हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे परिवार के लिये क्या नहीं हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सच होने वाले हसीन सपनों का आधार हो
तन मन की हसीं कल्पनाओं का आकार हो
दिल दिमाग़ की तरह तन मन में विचार हो
मेरी ज़िन्दगानी में पल-पल के समाचार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे ख़्वाबो-ख़यालों के लिये क्या नहीं हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे जीवन के लिये सब कुछ हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे जीवन के लिये सब कुछ हो।

आख़िरी ख़्वाहिश

हे! परमपिता परमेश्वर
मेरे मन की मुराद और मन्नत है कि
मेरे दिल की ख़्वाहिश व तमन्ना है कि
अब तुम मुझे ऐसी ख़तरनाक़ बेरहम मौत दे दो

मेरी मुहब्बत अब उसके दिल में ऐतबार नहीं है
मेरे अहसास अब उस के मन का संसार नहीं है
मेरे जज़्बात अब उस के दिल में वफ़ादार नहीं है
मेरी ख़्वाहिशें-तमन्नायें अब उसके विचार नहीं है

हे! परमपिता परमेश्वर
मेरे मन की मुराद और मन्नत है कि
मेरे दिल की ख़्वाहिश व तमन्ना है कि
अब तुम मुझे ऐसी ख़तरनाक़ बेरहम मौत दे दो

मेरी शायरी अब उस के दिल की ज़मानत नहीं है
मेरी चाहत व क़शिश उसके लिए अमानत नहीं है
मेरे दिल की पुकार उसके मन की इबादत नहीं है
मेरी इंसानियत अब उसके दिल में शराफ़त नहीं है

हे! परमपिता परमेश्वर
मेरे मन की मुराद और मन्नत है कि
मेरे दिल की ख़्वाहिश व तमन्ना है कि
अब तुम मुझे ऐसी ख़तरनाक़ बेरहम मौत दे दो

यादों औ मुलाक़ातों में अब मधुर मिलन नहीं है
मेरी मुहब्बत के लिये अब उसका नमन नहीं है
मेरी परेशानियों के लिए उसका मनन नहीं है
मेरी ज़रूरत के लिए उसका अब जतन नहीं है

हे! परमपिता परमेश्वर
मेरे मन की मुराद और मन्नत है कि
मेरे दिल की ख़्वाहिश व तमन्ना है कि
अब तुम मुझे ऐसी ख़तरनाक़ बेरहम मौत दे दो।

आपके बिना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुझ से कभी इस तरह न होना नाराज़
मेरा दिल व दिमाग़ हो जाता है उदास
मेरा तन और मन हो जाता है बदहाल
मेरा दामन ख़ुशी से हो जाता है वीरान

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके बिना मेरा दिलो-दिमाग़
इस तरह से इतना मज़बूर व बेहाल है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुझसे मत रहा करो इस तरह से बेज़ार
मेरा तन-मन इतना हो जाता है बेक़रार
अश्क़ों के दरिया बहने लगते हैं बेशुमार
बदहाल हो जाता है मेरा चैन औ क़रार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके बिना मेरे तन-मन के
इस तरह ऐसे लाचार हालात हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

इस वक़्त हमारे सामने है बेहद मज़बूरियाँ
रस्मों व रिवाज़ों की हैं ज़ालिम लाचारियाँ
प्यार को मिटा न सकेंगी यह कमज़ोरियाँ
एक दिन ख़त्म होगी मुलाक़ात की दूरियाँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपके लिये ख़्वाबों ख़यालों में
इस तरह से ज़रूरतों के जज़्बात हैं।

अन्ज़ाम-ए-चाहत

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुमने मुझको नहीं चाहा तो क्या हुआ
मुझ को मेरी चाहत का अहसास तो है
यह अहसास ही अहसास करातें हैं कि
मुहब्बत को भुलाना कितना मुश्क़िल है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जुदाई में यादों के नश्तर चुभते हैं सीने में
करवटें अन्धेरी रातों को तवील कर देती है
मिलन के इन्तज़ार में आँखे पथरा जाती है
बहार के मौसम में ज़िंदगी पतझड़ होती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यूँ चाहत को भुलाना बेहद मुश्क़िल होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बर्फ़ का बदन तन्हाई में ठण्डी आहें भरता है
तन व मन अन्दर से सहरा जैसा सुलगता है
ज़िन्दगी ख़ुशियों से महरूम व बंजर होती है
दर्दों ग़म की फ़सलें अश्क़ों से आबाद होती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यूँ चाहत को भुलाना बेहद मुश्क़िल होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुमने मुझको नहीं चाहा तो क्या हुआ
मुझ को मेरी चाहत का अहसास तो है
यह अहसास ही अहसास कराते हैं कि
मुहब्बत को भुलाना कितना मुश्क़िल है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ख़ुदा की अहमियत भी ख़त्म हो जाती है
नज़रे-इनायत जन्नत से बढ़कर लगती है
चाहत ही तो दीन औ ईमान बन जाती है
शराब-ए-शबनम में ज़िंदगी डूब जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यूँ चाहत को भुलाना बेहद मुश्क़िल होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ज़िन्दगी गुमनाम होती है चाहत की छाँव में
ढोना पड़ता है ज़िन्दगी को बेज़ान कन्धों पे
चाहत की भटकन में सर पर संग बरसते हैं
रुसवाई में आशिक़ों की रूहें आबाद होती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यूँ चाहत को भुलाना बेहद मुश्क़िल होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुमने मुझको नहीं चाहा तो क्या हुआ
मुझको मेरी चाहत का अहसास तो है
यह अहसास ही अहसास कराते हैं कि
मुहब्बत को भुलाना कितना मुश्क़िल है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ख़यालात काली नागिन की तरह से डसते हैं
तन्हा वक़्त में बेरहम जुदाई की धुनें बजती हैं
विरह के साज़ में दिल रक़्स-ए-मौत करता है
ग़म के समन्दर की गहराई में सुक़ूँ मिलता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यूँ चाहत को भुलाना बेहद मुश्क़िल होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सुबह व शाम मायूसी का वक़्त होता है
आफ़ताब बेनूर उदास हो कर उगता है
माहताब मुद्दत से सफ़र ख़त्म करता है
अश्क़ बदन पे सितारों जैसे चमकते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
यूँ चाहत को भुलाना बेहद मुश्क़िल होता है।

---

1. नश्तर=तीर **2.** तवील=लम्बी **3.** वस्ल=इन्तज़ार **4.** सहरा=रेगिस्तान **5.** अश्क़ =आँसू **6.** नज़रे इनायत=आँखों की कृपा, **7.** दीन=धर्म **8.** रुसवाई=बदनामी **9.** रूह=आत्मा **10.** साज़े-विरह=जुदाई का संगीत **11.** रक़्स-ए-मौत=मौत का नृत्य **12.** आफ़ताब=सूरज **13.** बेनूर=बिना प्रकाश **14.** माहताब=चाँद **15.** मुद्दत=लम्बे समय से।

बेबस दिल की पुकार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

क्या तुम्हें मेरे मज़बूर दिल की
लाचार-पुकार सुनाई नहीं देती
क्या तुम्हें मेरे तन और मन की
ख़्वाहिशें व मुरादें मालूम नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह अहसास नहीं है कि

क्या तुम्हें मेरी विचलित विरह की
व्याकुल वेदनायें सुनाई नहीं देती
क्या तुम्हें मेरे दिल औ दिमाग़ के
जज़्बातों का भी अहसास नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ख़बर नहीं है कि

क्या तुम्हें मेरी तमन्नाओं और
ख़्वाहिश के ख़यालात नहीं हैं
क्या तुम्हें मेरी मज़बूरियों और
बेक़रारी की भी ख़बर नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह समझ नहीं है कि

क्या तुमको मेरी बेताब करवटें बदलती
अंधेरी तवील रातों का अहसास नहीं है
क्या तुमको मेरी नादानी व दीवानगी में
बेख़ुदी के बेरहम हालात मालूम नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ऐतबार नहीं है कि

क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि मेरा प्यार
मेरे लिए घर व परिवार से कम नहीं है
क्या तुम्हें अहसास नहीं है कि मुहब्बत
मेरे हर सवालों का इक़लौता जवाब है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह विश्वास नहीं है कि

क्या तुम्हें अन्दाज़ा नहीं है कि इश्क़
मेरी ज़िंदगी और मौत का सवाल है
क्या तुम्हें अहसास नहीं है कि प्यार
मेरे लिये उपासना, पूजा व प्रार्थना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

क्या तुम्हें मुहब्बत की ख़बर नहीं है कि
चाहत औ क़शिश में कितनी बेक़रारी है
क्या तुम को कुछ भी मालूम नहीं है कि
मुहब्बत ही अब मेरा दीन और ईमान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ख़बर नहीं है कि

क्या तुम्हें यह अहसास नहीं है कि
मुहब्बत ही मेरी मंजिले हमसफ़र है
क्या तुम्हें मेरी ज़िंदगी के मुक़ाम के
ख़्वाबों व ख़यालों की ख़बर नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह आभास नहीं है कि

क्या आपको मेरे दिल और दिमाग़ की
बेख़याली का कुछ भी अहसास नहीं है
क्या आपको मालूम नहीं है कि मुहब्बत
मेरे लिये प्रार्थना,श्रद्दा और विश्वास है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ऐतबार नहीं है कि

क्या आपको ख़बर नहीं है कि मेरे लिये
महबूब का दामन जन्नत से कम नहीं है
क्या तुम्हें अहसास नहीं है कि मेरे लिये
महबूब का आशियाँ स्वर्ग से भी सुंदर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह विश्वास नहीं है कि

क्या तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता कि
प्यार मेरे तन व मन का संपूर्ण संसार है
क्या तुम्हें अहसास नहीं है कि महबूब के
छूने से मेरे अंग अंग ख़ुश्बू से महकते है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह समझ नहीं है कि

क्या तुम्हें यह जानकारी है कि मुहब्बत का
अहसास मेरे तन-मन में प्राणों का संचार है
क्या तुम्हें यक़ीन नहीं कि चाहत का सफ़र
मेरे लिये ख़ुदा की ज़ियारत से कम नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

क्या तुम्हें यह ऐतबार नहीं है कि प्यार
मेरे लिये रस्मों औ रिवाज़ों का बंधन है
क्या तुम्हें यह महसूस नहीं होता है कि
प्यार मेरे लिये सात वचन का चिंतन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ख़बर नहीं है कि

क्या तुम्हें विश्वास नहीं है कि प्यार
मेरे लिए व्रत, त्यौहार से कम नहीं है
क्या तुम्हें यह समझ नहीं आता कि
प्यार मेरे लिये शजर का चिन्तन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

क्या तुम्हें कुछ भी ख़बर नहीं है कि
प्यार मेरे लिये बसंत का मधुमास है
क्या आपको मेरा निर्मल और पवित्र
सच्चा प्यार भी दिखाई नहीं देता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह अहसास नहीं है कि

क्या तुम्हें कुछ भी सुनाई नहीं देता
मुझ पर कुछ तो रहमो-करम करो
मेरे बेबस दिल की पुकार को सुनो
मेरे दिल की दुआओं को पूरा करो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ऐतबार नहीं है कि

क्या आप को मेरी अजर और अमर
पाक़ मुहब्बत का भी आभास नहीं है
क्या आप तन-मन से चाहते हो कि
मेरा आप से विश्वास ख़त्म हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

क्या आप यह चाहते हो कि
बेशुमार औ बेइन्तहा मुहब्बत
तड़प-तड़पकर, घुट-घुटकर
बेरहमी से प्यार दम तोड़ दे

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ख़बर नहीं है कि

क्या आप चाहते हो कि हीर-राँझा
और लैला-मजनू की दिली दास्ताँ
फिर बेज़ुबान हो कर दौहराई जाये
बेबस होकर ज़माने को सुनाई जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह समझ नहीं है कि

क्या आप चाहते हो कि ज़माने से मुहब्बत का
निर्मल-पवित्र मान और सम्मान ख़त्म हो जाये
क्या आप यह चाहते हो कि सारी कायनात से
मुहब्बत का नाम औ निशान भी ख़त्म हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

आप इतने निर्दय कैसे हो सकते हो
मैंने मेरे मन की मुरादें व मन्नतों को
पूरी होने के लिए दिल से क्या-क्या
व कैसे-कैसे जतन व दुआ नहीं की

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

मैंने कई बार अनगिनत क़ोशिशें की
प्यार के रिश्ते को ज़िन्दा रखने की
मैंने हर तरह से बदहाली सहन की
प्यार के वादे-इरादे निभाने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह विश्वास नहीं है कि

मैंने हर तरह अपनों से बग़ावत की
मुहब्बत के इरादे पूरे करने के लिये
मैनें मन से आराधना व साधना की
मुहब्बत को पाक़ ज़ियारत समझकर

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि

मैंने देवी औ देवताओं से दुआयें की
मुहब्बत की मन्नतें और मुरादें माँगी
ज्योतिषियों से ग्रहों की दशा जानी
इसलिये पूर्ण रूप से आशावान हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्या तुम्हें यह ख़बर नहीं है कि

हर तरह से बेताब और लाचार हूँ
हर तरह से हैरान और परेशान हूँ
मगर इंसानियत में बेहद मज़बूर हूँ
इसलिये रिश्ते के लिये वफ़ादार हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी परेशानियों को
हल करके ख़त्म करो
यदि इस जन्म में मिलना
हर हाल में मुमक़िन नहीं हो तो
अगले जन्म में मुहब्बत के साथ
ख़ूबसूरत हसीं सफ़र गुज़ारने के लिये
अपनी जीवन लीला को ही ख़त्म कर के
मुहब्बत को अजर अमर करने के लिये तैयार हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अब भी तुम कहाँ पर हो
क्या तुम्हें अब भी कुछ समझ नहीं है
अब तो मेरी पुकार सुनकर आ जाओ।

बेगुनाह, गुनहगार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं ख़ुद से बेहद शर्मसार हूँ
हाँ मैं अफ़सोस व मलाल में हूँ
हाँ मैं ख़ुद से नफ़रत करता हूँ
हाँ मैं जाहिल और गँवार भी हूँ

क्योंकि मेरे पास आपका ऐतबार नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं हैवान और शैतान हूँ
हाँ मैं खूँख़ार दरिन्दा भी हूँ
हाँ मैं चाहत का क़ातिल हूँ
हाँ मैं तन-मन का लुटेरा हूँ

क्योंकि मेरे पास आपका प्यार नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं बेहद संगीन क़ुसूरवार हूँ
हाँ मैं ज़फ़ाओं का तीमारदार हूँ
हाँ मैं वफ़ाओं का गुनाहगार हूँ
हाँ मैं मासूमियत का हत्यारा हूँ

क्योंकि मेरे पास आपका इक़रार नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं मुहब्बत का सौदागर हूँ
हाँ मैं चापलूस औ मक्कार हूँ
हाँ मैं जज़्बात का जल्लाद हूँ
हाँ मैं एक अहसाँ फ़रामोश हूँ

क्योंकि मेरे पास आपका इज़हार नहीं है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं नाज़ायज़ तमन्नायें रखता हूँ
हाँ मैं मनमर्जी से एक तानाशाह हूँ
हाँ मैं चाहत व क़शिश का ख़ूनी हूँ
हाँ मैं आपके ख़्वाबों का क़ातिल हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

क्योंकि मैं आपके दिल के लायक़ नहीं हूँ

हाँ मैं आपकी उम्मीदों पर भी
दिल से ख़रा साबित नहीं हूँ
हाँ मैं अहसास व जज़्बात के
तन व मन से वाज़िब नहीं हूँ

क्योंकि मैं आपकी मुहब्बत के लायक़ नहीं हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं उसके निर्मल प्यार में
ऐतबार से मुनासिब नहीं हूँ
हाँ मैं उसकी ज़िन्दगानी में
माफ़िक जीवन-साथी नहीं हूँ

क्योंकि मैं आपका हमसफ़र नहीं हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं बेगुनाह हो कर भी
ख़ुद जुर्म क़ुबूल करता हूँ
हाँ मैं सजा-ए-क़त्ल की
बेरहम फ़रियाद करता हूँ

क्योंकि मैं आपका वफ़ादार नहीं हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के संपूर्ण संसार

हाँ मैं ख़ुदकुशी करने के लिये बेक़रार हूँ
अब तो दोजख ही मेरा आशियाना होगा
क्योंकि मैं अपने बेबस मज़बूर महबूब की
ख़ामोश निग़ाहों का दिल से गुनहगार हूँ

क्योंकि मैं आपका विसालेयार नहीं हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के संपूर्ण संसार
क्योंकि मैं आपका वफ़ादार नहीं हूँ
क्योंकि मैं आपका हमसफ़र नहीं हूँ
क्योंकि मैं आपका विसालेयार नहीं हूँ
क्योंकि मेरे पास आपका प्यार नहीं है
क्योंकि मेरे पास आपका ऐतबार नहीं है
क्योंकि मेरे पास आपका इक़रार नहीं है
क्योंकि मेरे पास आपका इज़हार नहीं है
क्योंकि मैं आपके दिल के लायक़ नहीं हूँ
क्योंकि मैं आपकी मुहब्बत के लायक़ नहीं हूँ।

दिल की ख़्वाहिशें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

निर्मल मुहब्बत की रुह बनकर
मेरे दामन के पवित्र रोम-रोम में
इस तरह मुझमें समा जाओ की
मेरे बदन के बेबस अंग-अंग को
तुम्हारे ख़ूबसूरत तन व मन का
प्यारा आभास-अहसास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हसीन यादों के चराग़ बन करके
इस तरह से रोशन हो जाओ कि
मेरे बेचैन व बेताब तन व मन में
नूरे-जन्नत जैसा प्रकाश हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यादग़ार मुलाक़ातों के लम्हें बनकर
इस तरह अजर-अमर हो जाओ कि
मेरे बेक़रार बेबस दिलो-दिमाग़ को
जन्मों-जन्मों जैसा आभास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे पल-पल की सारी ज़रूरतें बनकर
मेरी ज़िन्दगी का हमसाया हो जाओ कि
मेरे सुबह व शाम और दिन व रात को
घर और परिवार जैसा ऐतबार हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

महबूब का तसव्वुर

महबूब के तसव्वुर में महबूब

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब के तसव्वुर में तुम मेरे

मेरे तन व मन के सुन्दर उपवन हो
मेरे दिल के महकते हुए गुलशन हो
मेरे रोम-रोम में ख़ुश्बू के चमन हो
मेरे अंग-अंग में सावन की पवन हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह तुम महबूब के तसव्वुर में हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब के तसव्वुर में तुम मेरे

तन-मन में ख़ूबसूरत अहसास हो
मेरे रोम-रोम में हसीन प्रवास हो
बसंत का रंग बिरंगा मधुमास हो
मेरे जीवन में सतरंगी आभास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह तुम महबूब के तसव्वुर में हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
महबूब के तसव्वुर में तुम मेरे

मेरे दिल में कविता की कल्पना का मन्थन हो
मेरी कलम का हृदय स्पर्शी प्रेम का चिन्तन हो
मेरे गीतों में सात सुरों के संगम का बन्धन हो
मेरे मन वीणा में संगीत के सुरों का गुन्जन हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरे महबूब के तसव्वुर में हो

महबूब बहन के तसव्वुर में

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरी बहन के तसव्वुर में तुम मेरे

जीवन की हर बात औ हालात के राज़दार हो
मेरे तन-मन के दुख और सुख के समाचार हो
चुलबुली शरारतों में हँसी मजाक के विचार हो
घर औ परिवार में मेरी भावनाओं का प्रसार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरी बहन के तसव्वुर में हो

दोस्त के तसव्वुर में महबूब

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे दोस्त के तसव्वुर में तुम मेरी

मेरी ज़रूरतों के हमदर्द ख़यालात हो
मेरे जीवन की पहेली के सवालात हो
मेरे ज़हन की क़ैफियत के जज़्बात हो
बिना मक़सद की बेकार मुलाक़ात हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरे दोस्त के तसव्वुर में हो

माँ के तसव्वुर में महबूब

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे मेरी माँ के तसव्वुर में

मेरे पल-पल की भूख प्यास का अहसास हो
मेरे सुखद औ सुनहरे भविष्य का आभास हो
मेरे दिनचर्या के दिन व रात का विश्वास हो
ममता के आँचल में मेरे बचपन का प्रवास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरी माँ के तसव्वुर में हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे मेरी माँ के तसव्वुर में

जगत जननी की अहमीयत का जहान हो
रस्म व रिवाज़ों में संस्कारों का विधान हो
त्याग और बलिदान के लिये अभिमान हो
सहनशीलता में धरती माँ जैसी खदान हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरी माँ के तसव्वुर में हो

पत्नी के तसव्वुर में महबूब

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरी पत्नी के तसव्वुर में तुम मेरे

ख़ुशियों और उमंगों का तीज त्यौहार हो
दुख-सुख में साथ निभाने का विचार हो
सुख और शान्ति की देवी का अवतार हो
मेरी हर ज़रूरतों का घर और परिवार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरी पत्नी के तसव्वुर में हो

औरत के तसव्वुर में महबूब

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
एक औरत के तसव्वुर में तुम मेरे

दिल और दिमाग़ में मान और सम्मान हो
इज्ज़त आबरू के लिए मन में अरमान हो
कायनात की हर परेशानियों के निदान हो
समाज की ख़ुशहाली के लिए संविधान हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से एक औरत के तसव्वुर में हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
एक औरत के तसव्वुर में तुम मेरे

घर व परिवार की पालन हार हो
रिश्तों की ख़ुशियों का आधार हो
जीवन में इन्सानियत का प्यार हो
सुन्दर आशियाने की कलाकार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से एक औरत के तसव्वुर में हो

बेटी के तसव्वुर में महबूब

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरी बेटी के तसव्वुर में तुम मेरे

मेरे अधूरे सपनों को सफल करने वाले अरमान हो
मान और सम्मान के लिये ज़माने में कीर्तिमान हो
संस्कृति व संस्कार के लिए परिवार का ईमान हो
सुख, शान्ति, समृद्धि व महकती ख़ुशी की जहान हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरी बेटी के तसव्वुर में हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरी बेटी के तसव्वुर में तुम मेरे

मेरे दुख और दर्द में सहारे की कामना हो
मेरे निर्मल व पवित्र तन-मन की भावना हो
अजनबी रिश्तों को निभाने की आराधना हो
मेरी मेहनत औ वफ़ा की साकार साधना हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से मेरी बेटी के तसव्वुर में हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुम मेरे ख़्वाबों के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे तन-मन के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे जज़्बात के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे ख़यालों के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे अहसास के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे अरमानों के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे अंग-अंग के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे रोम-रोम के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरी ख़्वाहिशों के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरी तमन्नाओं के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे दिलो-दिमाग़ के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरी मनोकामनाओं के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे मन की मुरादों के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे दिल की दुआओं के लिये क्या नहीं हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे जीवन के लिये सब कुछ हो
तुम मेरे जीवन के लिये सब कुछ हो।

महबूब शजर का फलसफ़ा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

चेहरे पर गुल मोहर के शजर के गुलों की रंगत है
सीरत और दिमाग़ में नीम के शजर जैसी संगत है
वादों व इरादों में सागवान के शजर की फ़ितरत है
घर परिवार के लिए बरगद के शजर की इनायत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे मेरे प्यार की रंगत, संगत, फ़ितरत और इनायत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

रिश्तों के बन्धन में बबूल के शजर जैसी हिफ़ाज़त है
ज़ुबान में आम के शजर की तरह रसीली शराफ़त है
आँचल में जामुन के शजर की जैसी हसीन जन्नत है
दुआओं में पीपल के शजर की तरह से पाक़ मन्नत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे मेरे प्यार की हिफ़ाज़त, शराफ़त, जन्नत व मन्नत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आँखों में शीशम के शजर जैसी प्यारी सुन्दर इमारत है
रोम-रोम में चन्दन के शजर की ख़ुश्बू की ज़ियारत है
दिल औ दिमाग़ में अशोक के शजर जैसी ही मन्नत है
अंग-अंग पुराने इमली के शजर की तरह से नसीहत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे मेरे प्यार की इमारत, ज़ियारत, मन्नत और नसीहत है।

---

1. शजर=पेड़ **2.** गुल=फूल **3.** सीरत=गुण **4.** फ़ितरत=प्रवृति **5.** इनायत=रहम **6.** जियारत=धार्मिक यात्रा **7.** नसीयत=सलाह।

आओ सखी हम प्यार को

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे तन औ मन में प्रेम का संचार है
दिल और दिमाग़ में प्यार की बहार है
एक-दूजे का अहसास अपना संसार है
रोम-रोम में प्यार निवेदन का प्रसार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब तन-मन के ऐसे हालात है तो
फिर क्यों नहीं हम मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हम मधुर मिलन को स्वीकार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक-दूजे के लिए हम तन व मन के चितचोर हैं
तन और मन में नाचता मधुर मिलन का मोर है
विरह की वेदनाओं का विचलित मन में शोर है
करवटें बदल कर गुज़री तन्हा रातों की भौर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
जब दिल दिमाग़ के ऐसे हालात है तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हम बेचैन मुहब्बत का इज़हार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दो तन एक जान होने को हम तैयार है
हसीन मुलाक़ातों के लिए हम बेक़रार है
हमारे सच होते सपनों में घर-परिवार है
जीवन भर का साथ निभाने का विचार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
जब ख़्वाबो-ख़यालों के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिलकर ऐसा करें
आओ सखी जीवन साथी होने का क़रार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सुहाग की सेज पे तन-मन का शृंगार है
गले में विश्वास की वरमाला का हार है
मन में करवा चौथ का पावन त्यौहार है
सात वचन निभाने का दिल से क़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब रोम-रोम के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार को घर-परिवार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक दूसरे की ज़रूरतों के जज़्बात हैं
हमारे प्यार में वफ़ाओं के ख़यालात हैं
रस्मो-रिवाज़ों के बंधन के सवालात हैं
हमारे तसव्वुर में ख़ुशहाल कायनात है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
जब हमारे ज़हन के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार के रिश्ते को समझदार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारा प्यार निर्मल होकर अमर-अजर है
शान्त होकर भी सारे संसार को ख़बर है
रिश्तों के अहसास में हरियाला शजर है
हमारा दिल दरिया, औ ज़हन समन्दर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब ज़िन्दगी के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार को वफ़ादार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सितमगर ज़माना हमारे प्यार से परेशान है
नामुमक़िन रिश्ता मुमक़िन हो गया तो हैरान है
प्रेम ईश्वर का वरदान तो भी ज़माना नादान है
प्रेम का आशियाना उजाड़ कर ज़माना हैवान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ज़ालिम ज़माने के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी हम मुहब्बत को ख़बरदार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बसन्त औ सावन का मधुरतम् मधुमास है
रोम रोम में प्यार के ख़ुमार का निवास है
एक-दूजे की हसीन बाँहों का अहसास है
निर्मल औ पवित्र प्यार पर हमें विश्वास है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
जब अंग-अंग के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हम मुहब्बत को मज़ेदार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्यार ही अब तो हमारा दीन औ ईमान है
मन के मन्दिर में अब प्यार ही भगवान है
मिलन की आरज़ू और तमन्नायें अज़ान है
प्रेम ईश्वर हो जाये मन में ऐसे अरमान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
जब दिल व दिमाग़ के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिल कर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार के रिश्ते को वफ़ादार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक-दूजे के बिना ज़िन्दगी मौत के समान है
एक-दूजे की यादें ही हमारे क़ीमती सामान हैं
आराधना और उपासना में प्रेम ही भगवान है
एक-दूजे के लिए हमारी जान तक क़ुर्बान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
जब हमारे जीवन के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार के बन्धन को अधिकार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सुहानी चाँदनी रात में हमारा विश्राम है
एक-दूजे की बाँहों में हमारा आराम है
हसीन औ ख़ूबसूरत सुबह और शाम है
एक दूजे के ख़्वाबो ख़यालों में मुक़ाम है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब रोम रोम के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार को ख़ुशगवार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारा जीवन एक दूजे को अर्पण है
तन व मन से एक दूजे को तर्पण है
रोम रोम से एक दूसरे को समर्पण है
दिल व दिमाग़ एकदूजे का दर्पण है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब अंग अंग के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार को सुन्दर उपहार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

चैन और सुक़ून में एक दूजे का दीदार है
प्यार को निर्मल पवित्र करने का क़रार है
ख़यालों में हर वक़्त एक-दूजे का विचार है
तसव्वुर में हर पल एक-दूजे का समाचार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिलो दिमाग़ के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी प्यार को दिल से फ़र्ज़दार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्रेम का ये रिश्ता हमारे लिए अमानत है
एक-दूजे का विश्वास हमारी ज़मानत है
प्यार का भरोसा परमात्मा की इबादत है
प्रेम का ये सफ़र हमारे लिए ज़ियारत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दीनो ईमान के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी प्यार को मन से क़र्ज़दार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्यार का पवित्र अहसास हमारे लिए साधना है
जन्मों-जन्मों के लिए प्यार हमारी आराधना है
ख़ुशहाल प्यार का आशियाँ हमारी उपासना है
दुआओं में एक दूजे की ख़ुशी हमारी प्रार्थना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब दिल दिमाग़ के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हमारे प्यार को अनमोल विचार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के मधुर अहसास से जीवन मधुशाला है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब रोम-रोम के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी हम प्यार को हसीन संसार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

नागिन से लहराते हुए बालों में घटा पुरवाई है
तन और मन में गूँजती प्रेम धुन की शहनाई है
आँगन में निर्मल औ पवित्र प्यार की परछाई है
प्यार के अहसास से फूलों की ख़ुश्बू शरमाई है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जब मधुर प्यार के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी प्यार के आनन्द को साकार करें

.

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

महकते हुये गुलशन में भँवरों का गुन्जन है
खिलते फूलों की रंगत में सतरंगी जीवन है
बसन्त की बहारों में महकता हुआ उपवन है
सावन की बारिश में हरियाला सुंदर चमन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हसीन कायनात के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम मिल कर ऐसा करें
आओ सखी प्यार को प्रकृति का शृंगार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक दूसरे के इशारों में प्रेम निवेदन स्वीकार है
एक-दूजे के रोम-रोम में प्रेम की मधुर बहार है
एक दूसरे के अंग-अंग में प्रेम रस की फुहार है
दिल और दिमाग़ मधुर मुलाक़ात को बेक़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हसीन कायनात के ऐसे हालात हैं तो
फिर क्यों नहीं हम दोनों मिलकर ऐसा करें
आओ सखी हमारे प्यार को मधुर मनुहार करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आओ सखी हम प्यार को मज़ेदार करें
आओ सखी हम प्यार को वफ़ादार करें
आओ सखी हम प्यार को अधिकार करें
आओ सखी हम प्यार को ख़बरदार करें

आओ सखी हम प्यार को समझदार करें
आओ सखी हम प्यार को ख़ुशगवार करें
आओ सखी प्यार को अनमोल विचार करें
आओ सखी हम प्यार को घर-परिवार करें
आओ सखी प्यार को मन से क़र्ज़दार करें
आओ सखी हम बेचैन प्रेम का इज़हार करें
आओ सखी प्यार को दिल से फ़र्ज़दार करें
आओ सखी हम प्यार को मधुर मनुहार करें
आओ सखी हम प्यार को हसीन संसार करें
आओ सखी हम प्यार को सुन्दर उपहार करें
आओ सखी जीवन साथी होने का क़रार करें
आओ सखी हम मधुर मिलन को स्वीकार करें
आओ सखी हम प्यार को प्रकृति का शृंगार करें
आओ सखी हम प्यार के आनन्द को साकार करें।

प्यार एक आराधना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

विरह की वेदना में जुदाई की जलन है
दिल और दिमाग़ में चाहत की तपन है
रोम-रोम में हसीन क़शिश की अगन है
दरिया की तरह अश्कों से बहते नयन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे बेशुमार और निर्मल प्यार को मेरा नमन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ज़रूरतों के लिए जज़्बात का शजर है
हरपल के अहसास में प्रेम की ख़बर है
मधुर मुलाक़ात के इन्तज़ार में नज़र है
ख़यालों में ख़ुद से बेख़ुदी का असर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे बेमिसाल और ख़ूबसूरत प्यार को मेरा नमन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन-मन में प्यार का सोलह शृंगार है
दिल और दिमाग़ में प्रेम की बहार है
हसीन बाँहों में समाने को बेक़रार है
अंग-अंग में मधुर प्यार का ख़ुमार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे सदाबहार और यादगार प्यार को मेरा नमन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अपने जायज़ अधिकारों का बलिदान है
अपने प्यार पर उसे सम्पूर्ण अभिमान है
'साथी' की सारी समस्या का समाधान है
बिना प्यार के उसका जीवन शमशान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार के ऐसे अरमान और ईमान को मेरा नमन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल में चराग़ की तरह जलने के अरमान है
तन-मन, चाँद-सूरज की तरह प्रकाशवान है
रोम-रोम में प्यार का अहसास चलायमान है
प्यार ख़्वाबों व ख़यालों में हर पल विद्यमान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार की ऐसी क़ुदरत और क़ैफियत को मेरा नमन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ज़मीन आसमान मिलने तक इन्तज़ार है
समंदर के पानी की तरह गहरा प्यार है
गगन में तारों की तरह यादें बेशुमार हैं
हर पल दिल की धड़कनों में इज़हार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे बेहिसाब और बेक़रार पवित्र प्यार को मेरा नमन है।